Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
SahJ 2

13. D. 42.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Hindi SahJ 2

Kṛishṇa-bālalīlā

Kreeshun Bal Leela

कृष्णबाललीला

کرشن بال لیلا

श्री विष्णुप्रसाद वकील के पुत्र श्री राधाकृष्ण चरणार-
विन्द मधुप ज़िलअ़ गया जी स्थान टेकारी निवासि
हाल बासी स्थान हज़ारी बाग़ ज़िलअ़ हज़ारी-
बाग़ बाबू जगन्नाथ सहाय कृत

जिसमें

श्री कृष्णचन्द्र महाराज के बाल चरित अतिमनोहर
अनेक रागों में वर्णित हैं

तीसरी बार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई

जुलाई सन् १८८४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत कि-फ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
काव्य	सिद्धान्तसंग्रह	आदिपर्व्व सभापर्व्व	लेहदा भी हैं-
सूरसागर	रामविनय शतक	वन पर्व्व	१-आदिपर्व्व
रामसागर	सतसई मूल	२-दूसरे हिस्सा में	२-सभा पर्व्व
विश्रामसागर	सतसई सटीक	विराट पर्व्व उद्योग	३-वन पर्व्व
प्रेमसागर	सभाविलास	पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रो-	४-विराट पर्व्व
ब्रजविलास बड़ा	जुगुलविलास	ण पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व
तथा छोटा	तुलसी शब्दार्थप्रकाश	३-तीसरे हिस्सा में	६-भीष्म पर्व्व
कृष्णाप्रिया	भजनावली	कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	७-द्रोण पर्व्व
विजयमुक्तावली	प्रेमरत्न	गदा पर्व्व सौप्तिक-	८-कर्ण पर्व्व
अनेकार्थ	चित्रचन्द्रिका	पर्व्व ऐषीक पर्व्व	९-शल्य पर्व्व व गदा
छन्दोर्णव पिंगल	बारहमासा ब०रे०कृष्ण	विशोक पर्व्व स्त्री प	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व व
रसराज	मनोहर लहरी	र्व्व शान्ति पर्व्व में रा-	मय ऐषीक व वि-
रसिकप्रिय रसचन्द्रो-	गंगालहरी	ज धर्म्म आपद धर्म्म	शोक व स्त्री पर्व्व
कृष्णगीतावली	यमुनालहरी	मोक्ष धर्म्म	१०-शान्ति पर्व्व राज-
नवरत्न भाष्य कवि-	पियूषलहरी	४-चौथे हिस्सा में	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दा-
सौदागर लीला	जगद्विनोद	शान्ति पर्व्व दान ध-	न धर्म्म
रासलीला	शृंगार बत्तीसी	र्म्म अश्वमेध आश्रम	११-अश्वमेध आश्रम
भूषनेश भूषण	नवीन संग्रह	वासिक पर्व्व व मौसल	वासिक मुशल पर्व्व
शंकर चरितसुधा	भाषा इतिहास	ल पर्व्व व महा प्र-	महा प्रस्थान स्वर्गा
उपदेश चन्द्रिका		स्थान स्वर्गा रोहण	रोहण
मंगलविनोद	महाभारत	पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२-हरिवंश पर्व्व
विजय चन्द्रिका	१-पहिले हिस्सा में	महाभारत पर्व्व व-	महाभारत सबलसिंह

श्रीगणेशाय नमः

अथ कृष्णबाललीला

लिख्यते

दोहा

बन्दौं गणपति गौरिपति सदा नाइ पद माथ ॥ होउ प्र-
सन्न जेहि बरणाऊं लीला श्रीयदुनाथ ॥ १ ॥ जगत जननि
श्री कालिका श्री दिनकर भगवान ॥ प्रणऊं सब के कमल
पद देहु भक्ति वरदान ॥ २ ॥ राग भैरों ॥ सुरसरि
जय कलि मल दल हरनी ॥ महा घोर पातक रजनी को
तम टारन जिमि तरनी ॥ धु० ॥ धोवन पद पाथोज विष्णु के
ईश जटा में समानी ॥ पूजित पद सुर नर मुनि गण जन
भक्ति मुक्ति की दानी ॥ १ ॥ जह्नु सुता त्रय लोक निवासि-
नि पावन खल समुदाई ॥ कलि में दरश पान मज्जन बि-
नु नाहीं तरन उपाई ॥ २ ॥ जय कलि वारिधि बोहित
गंगा पाप पुञ्ज दुख दरनी ॥ जगन्नाथ भक्ती बर मांगे
श्याम चरण सुख करनी ॥ ३ ॥ १ ॥ बन्दौं नन्द यशोदा
माई ॥ जिन हिं दिखायो बाल चरित प्रभु करि लीला

बडुताई ॥ ध्रु० ॥ प्रणाऊं पुनि वसुदेव देवकी जहं जन्में यदुराई ॥ कंस मारि पितु मातु उबारेउ बेड़ी चरण खुलाई ॥ १ ॥ प्रणाऊं पुनि वृष भानु कार्न्तिदा कौन कहे प्रभुताई ॥ जहँ जन्मी हरि प्रिया राधिका लीला किये अधिकाई ॥ २ ॥ वन्दौं माता श्री बलदेव कि रोहिणि नाम कहाई ॥ ललिता आदिक सब सखियन को राधा दल जितनाई ॥ ३ ॥ श्री दामा आदिक जे सखा सब संगी कुंवर कन्हाई ॥ जगन्नाथ सब के पद वन्दौं करहु कृपा समुदाई ॥ ४ ॥ २ ॥ **सांगीत राग ईमन** ॥ वन्दौं चरणार विन्द सन्तन सुखदाई ॥ ध्रु० ॥ कक कक कृष्ण दास खखखख खड्ग सैन दास ॥ गगगग गिरिधर गोवाल भक्तन यदुराई ॥ १ ॥ घघघघ घाटम दास चचचच चतुर दास ॥ जजजज जय देव आदि सब के शिर नाई ॥ २ ॥ ततत त तुलसि दास दद दद देव दास ॥ धध धध धरम दास चरणन बलि जाई ॥ ३ नननन नन्द दास पपपप पूर्ण दास ॥ बबबब बिदुर आदि प्रणवौं मन लाई ॥ ४ ॥ भभ भभ भक्त दास ममम म मान दास ॥ ररर र राम दास भक्तन रघुराई ॥ ५ लल लल लाल दास ससस स सूर दास ॥ हह हह हरि व्यास भक्तन समुदाई ॥ ६ ॥ भभ भभ भक्ति चाय ॥ शश शश शीश नाय ॥ जजजज जगन्नाथ गावत हरखाई ॥ ७ ॥ ३ ॥ **राग भैरों** ॥ होहु प्रसन्न दया के सागर जय शंकर त्रिपुरारी ॥ मस्तक गंग चन्द्रमा शोभे

संगहि गिरिजा नारी ॥ ध्रु० ॥ नील कण्ठ उर मुराड की
माला कर त्रिशूल धराये ॥ अंगन माहिं विभूति रमाय दि
गम्बर भेष बनाये ॥ १ ॥ जाके ओढ़न है मृग छाला सन्त-
न के सुख दाई ॥ राम को नाम बसत उर अन्तर महिमा बर-
णि न जाई ॥ २ ॥ निज किंकर मोहिं जानि के शंकर
देहु भक्ति बरदाना ॥ जगन्नाथ जाके बल गावत ली-
ला श्री भगवाना ॥ ३ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सूर दास जग में
भयो जगत जात ज्यों सूर ॥ गाये सब बिधि करि सुय-
श हरि लीला रस पूर ॥ १ ॥ तिनहिं कृपा बल पाइ ॥
कछु चरित बिनय संयुक्त ॥ जगन्नाथ वरणन करत गा-
वत दायक मुक्त ॥ २ ॥ जगन्नाथ बहु पदन में होत गान
में भंग ॥ ताते जन जगन्नाथ अस बहु पद लिख्यो अभं-
ग ॥ ३ ॥ हौं सुत विष्णु प्रसाद के टेकारी है धाम ॥ रहौं
हज़ारी बाग़ में जन्म भूमि यहि ठाम ॥ ४ ॥ ५ ॥ अथ राग जंग-
लो ॥ श्याम की गति वर्णि न जाई ॥ टे० ॥ निर्गुण ते जो
स गुण है आये ॥ भक्तन हित बहु रूप बनाये ॥ १ ॥ कौ-
शल्या तन हित तप कीन्हो ॥ राम चन्द्र होय पुत्र कहाये ॥ २
देवकी को सोई तप देखिके ॥ कृष्ण चन्द्र तहँ नाम ध-
राये ॥ ३ ॥ यशुदामति बाल चरित हरि देखेउ ॥ गोपिन
संग में रास मचाये ॥ ४ ॥ जगन्नाथ जेहि बिधि हरि जाने ॥
ता बिधि तेहि सुख दिये यदु राये ॥ ५ ॥ ६ ॥ राग गौर श्रोग-
हर ॥ मथुरा नगरिया यमुना तट परम सोहावन हो ॥
ललना ॥ जहँ जन्मे यदु राय जगत मन भावन हो ॥ १ ॥

धन्य धन्य वसुदेव औ देवकी जो भामिनि हो ॥ जिनहिं भवन यदुनाथ जन में अध जामिनि हो ॥ २ ॥ मथुरा के राजा जो कंस सो अधिक सतावल हो ॥ हाथ पैर बँधवाय क़ैद करावल हो ॥ ३ ॥ प्रथमहिं कैद ते देवकी यमुन पग धारल हो ॥ यशोमति होइ गेल भेट से दुःख विसारल हो॥ ४॥ छव बालक हरि देल से कंस सँहारल हो ॥ केहि विधि होत उवार सखी दुःख दारल हो ॥ ५ ॥ निज सुत दै हम तुम्हरे बालक के बचावव हो ॥ शोच निवारहु आपन विपति छोडावव हो ॥ ६ ॥ भादों बदि तिथि अष्टमी कृष्ण जी जनम लेल हो ॥ आपहिं खुलगो द्वार बंधन सब कटि गेल हो ॥ ७ ॥ पाहरू भेल अचेत कृष्ण सूप राखल हो ॥ गोकुल चले वसुदेव यमुन अभिलाषल हो ॥ ८ ॥ प्रभू दियो पद लरकाय यमुन छुइ थाह भेल हो॥ यशुदा पुतरि लेइ आये अपन सुत धरि देल हो ॥ ९ ॥ पटकन लाग्यो कंस हाथ ते छुटि गइ हो ॥ जन्मेव काल तो दूसर मोहिं का सहारइ हो॥ १०॥ अरु एक तिय वसुदेव रोहिणी रहि गोकुल हो ॥ तहँ जन्में बलदेव गावहिं सब मंगल हो ॥ ११ ॥ जगन्नाथ यश गावल जन्म सुनावल हो ॥ दिन दिन बढ़त गोपाल महर सुख पावल हो॥१२॥७॥ **राग धमार॥ मंगल ॥**

कृष्ण जनम सुनि गोकुल नन्द आनन्द भये ॥ गावहिं मंगल गोवालिनि सब हर्षित हिये ॥ १ ॥ कंचन थार में साजि के आरति उतारहीं ॥ हर्षित कहि यशोदा जी से पुत्र

(निहाल)

निहारहीं ॥ २ ॥ अंचल मातु उघारि के पुत्र देखावहीं॥ जेहिं ब्रह्मा नहिं पाव सो गोद खेलावहीं ॥ ३॥ दधि कांदो की धूम गोकुल में मचावहीं ॥ दधि सरिता बहि चलेउ सुरन पछुतावहीं ॥ ४॥ सांवल मूरति देख जनम फल पावहीं ॥ यशोमति भाग सराहिं सोहर सब गावहीं ॥ ५॥ नन्द राय हरषाय के द्रव्य लुटावहीं ॥ याचक सब मन भावित भूषरा पावहीं ॥ ६॥ जगन्नाथ बलि आइ बिरद हरि गावहीं ॥ प्रेम सहित नर गावैं बैकुराठ सिधावहीं॥ ७॥ ८॥

राग सारंग ॥ पूतना को कंस पठाई ॥ टेक ॥ गोकुल में जन्में नन्द लाला ॥ संकर्षरा दोउ शत्रु बिशाला॥ तिन्ह बध करहु उपाई ॥ १ ॥ सुन्दर नारि के रूप बनाई कुच में विष भरि गोकुल आई ॥ जहं पौढ़े यदुराई ॥ २॥ दुग्ध पियन लागे यदु नन्दन ॥ सात दिवस के रहे सुख कान्दन ॥ नभ के पन्थ उड़ाई ॥ ३ ॥ तलकत प्राण लिये यसुदा सुत ॥ चकित भये देखत सब अद्भुत ॥ दान दिये नन्द राई ॥ ४ ॥ आपन धाम दिये करुणा कर॥ दीन दयाल दया के सागर ॥ जगन्नाथ बलि जाई॥ ५॥ ९॥ पुतनाबध जब सुनि पाई ॥ धु॰॥ बीरा ले कंसासुर बोला ॥ जाकर मन बध में नहिं डोला ॥ सोई बीरा ले जाई॥ १॥ श्रीधर विप्र गमन तब कीन्हा ॥ महर नारि तेहि आसन दीन्हा ॥ कहहु विप्र कुशलाई॥२ नन्द रानी तब गई अस नाना ॥ विप्र गयो जहं कृपानिधाना ॥ लखी श्याम चतुराई ॥ ३॥ ऐंठी जीह तुरत

कृष्ण छवि ॥ वसहु मेरे उर सदन सदाई ॥ ९ ॥ १४ ॥ ॥
राग आसावरी ॥ एक ग्वालिन जाइ सुनाई ॥ बचन
मोर सुनहु यशोदा माई ॥ टेक ॥ एक समय हरि गे-
ग्वालिन गृह ॥ सोवत ताको पाई ॥ चोटी बाँधि दई च-
रपाई ॥ दीन्ही मटु किया गिराई ॥ १ ॥ खान लगे जब
ही हरि गोरस ॥ जागी ग्वालिन भाई ॥ करि के शोर
सखिन को बोलाई ॥ पकड़ि लियो यदुराई ॥ २ ॥ जाइ
निकट यशोदा के भाख्यो ॥ तब अस बोले कन्हाई ॥
माता झूंठ कहति हैं ग्वालिन ॥ हम किमि सीका पाई
॥ ३ ॥ डाटि दीन्ह यशुदा जब ग्वालिन ॥ लज्जित घर फिरि
आई ॥ जगन्नाथ या बिधि करि लीला ॥ सुख देते पितु मा
ई ॥ ४ ॥ १५ ॥ राग धनाश्री ॥ भक्ति विवश बँधिगे य-
दुराई ॥ मुनि गण ध्यान माहिं नहिं आवत ॥ बाँधेउ ता
हि यशोदा माई ॥ एक दिवस लागे हरि खाना ॥ माखन
घर ते लाई ॥ आप ऊखली चढ़ि के बैठे ॥ चहुं दिशि ग्वा
ल बाल समुदाई ॥ १ ॥ तेहि खन आई यशोमति मैया ॥ संग
सखिन समुदाई ॥ आन दिवस मोहि झूंठ बनायो ॥ आज
पकड़ि आपहि ते पाई ॥ २ ॥ तब माता रस्सी मँगवाई ॥
बाँधन हित यदुराई ॥ सब घर घर की रस्सी आई ॥ तबहुं
न बन्धन भयउ कन्हाई ॥ ३ ॥ माता कि भक्ति हरि देखि के ॥ आ-
पहिं गये बँधाई ॥ घुसकत यमलार्जुन को गिरायो ॥ जग
न्नाथ तारे सुखदाई ॥ ४ ॥ १६ ॥ राग बंगाला ॥
वृक्ष गिरनि सुनि माता धाई ॥ लिये सुत गोद उठाई हो ॥

टेक ॥ देखि बिपति गोकुल में भारी ॥ नन्द बसे वृन्दाबन
हो ॥ तहँ दोउ भाई संग ले गोवालन ॥ लागे धेनु चरावन
हो ॥ १ ॥ तहँ वत्सासुर कंस पठायो ॥ हरि तेहि मारि गिरा-
ये हो ॥ ताके भाइ बकासुर आयो ॥ तेहि सुर लोक पठाये हो ॥ २
माता सुनि बोली पछताई ॥ अब जनि जाहु चराई हो ॥
घर में खेलहु मिलि दोउ भैया ॥ दीन्ही भंवर चकाई हो ॥ ३ ॥
खेलन लगे भवन बल मोहन ॥ आवे गोपिन धाई हो ॥ कुच
में चकई बक्षाहरि खेलें ॥ जगन्नाथ बलि जाई हो ॥ ४ ॥ १७ ॥
॥ राग घर्ज का लंगड़ो ॥ धेनु दुहावन राधा जाई ॥ टे॰ ॥ बरसाने
ते चली राधिका मिली जहां बन वारी ॥ आई हैं हम धेनु दुहावन
दूहहु मुरली धारी ॥ दूहि दई यशोदा नन्दन प्रभु आपन धा-
म सिधाई ॥ या बिधि खरका गाय दुहावत श्री वृष भान दु-
लारी ॥ १ ॥ दरश पाय मुरलीधर मोहन तपन बुझावत सारी ॥
जगन्नाथ या बिधि करिके मिस ॥ सखियन मिलत कन्हा-
ई ॥ २ ॥ १८ ॥ राग जंगलो ॥ एक समय गै धेनु चराव
न बन में श्री बलदेव कन्हैया ॥ धु॰ ॥ कंस अघासुर को
तहँ भेजेउ सर्प रूप धरि मुख फैलैया ॥ ग्वालन सब कन्दर
अनुमानि के हेलि गये तेहि बदन मझैया ॥ १ ॥ हरि तहँ जा-
इ के तन को बढ़ाये निसरा प्राण सो शब्द मचैया ॥ ग्वाल
निसर बल के दल में गये जाइ तहां सब हाल जनैया ॥ २ ॥
यमुना तीर नहान करन लागे भोजन भेज दियो तहँ मैया ॥
तब लगि ब्रह्मा धेनु चोराई नूतन सब रचि दीन्ह कन्हैया ॥
ब्रह्मा लज्जित होय कै आये अस्तुति लागे करन सुनैया ॥

चतुर यदुराई ॥ धु०॥ एक दिवस सखियन सब मिलि जु-
लि ॥ यमुना में आईं नहाई ॥ १ ॥ जाइ छिपाइ तहां य-
दुनन्दन ॥ लीन्हा चीर चोराई ॥ २ ॥ कर जोरि हरि से स-
खि मिनती करें देहु मोर चीर कन्हाई ॥ ३ ॥ अबहींन
चीर मैं देउंगा तोहि॥ आवहु लाज बिहाई ॥ ४ ॥ बाहर
आईं॥ सखिन सब जल से ॥ दीन्ह तबै समुदाई ॥ ५ ॥
रास शरद पूनों में करिके॥ आशा देव पुराई ॥ ६ ॥ जनज-
गन्नाथ दयानिधि या विधि ॥ लीला चीर बनाई ॥७॥२३॥
राग कान्हरा॥ चौबे देहु मोहिं कछु खान ॥ सुर मख हे-
तु मथुरा के ब्राह्मण करत रहे पकवान ॥ धु०॥ एक समय
गै धेनु चरावन क्षुधित भये तहं सकल गो वालन ॥ कह
हरि मथुरा चौबे रह हीं मांगु तिनहिं जल पान ॥ १ ॥
सुनि चौबे सब डाटन लागे चौबाइनि लै पाक सिधाईं॥
मिली प्रेम से नन्द लाल सों जात न प्रीति बखान ॥ २ ॥
एक चौबे रोकी तिय आपनि निसरो ताकर प्रान ताहि
क्षण॥ ताकर मन हरि ऊपर लागा नारि दिये गुणखान॥३
तिन हिं भक्ति दयखाय मुदित मन आये घर पर श्री मन मो-
हन ॥ पूजन इन्द्र भई तैयारी जगन्नाथ जन गान॥४॥२४॥
राग सोरठ ॥ प्रभू ब्रज डूबन ते ये बचाये॥ धु०॥ मेघ
हेत जब सब ब्रज बाला इन्द्र को पूज्यो आय ॥ गर्व प्रहा-
री श्री बनवारी दिय पूजा को रोकाय ॥ जब सब गिरि गो-
वरधन पूज्यो इन्द्र ने झर बरसाई ॥ १ ॥ नख पर टेका
तब गिरि वर प्रभु दिये सब हिं को बचाई॥ आन रूप है पूजा

लीन्हो इन्द्र अति मन पछताय ॥ घटा नीर जब सब मेघवा के तब जानी प्रभुताई ॥ २॥ जब हरि भोर को धेनु चरावन गे बलदाऊ के संग ॥ करि के ध्यान इन्द्र तब आयो जानि प्रभु के संग ॥ बाट रोकि कर जोरि के बोले क्षमा करहु यदुराई ॥ ३॥ कामधेनु के संग आवन तें क्षमा कीन्ह अपराध ॥ कामधेनु औ इन्द्र उभय गे बन्दि चरण अति साध ॥ जगन्नाथ हरि धाम सिधाये गावै जो मन चित लाइ ॥ ४ ॥ २५ ॥ राग पर्ज ॥ दान तुम दीजिये री ब्रज नारि ॥ ध्रु॰ ॥ एक समय सब ग्वाल लेइ संग कुंवर कन्हाई ॥ गे जेहि मारग ग्वालिन दधि बेचन को जाई ॥ बाट रोकि बोलत भये हो दान हमारो देहु ॥ बिन लिये दधि दान के मग जान न पैहो ॥ १॥ कहती ग्वालिनि कान्ह चोरि करि उर न अघायो ॥ तब मारग बिच आइ के दान की रीति चलायो ॥ जाइ कहों जो कंस से हो ब्रज बसने नहिं देहिं ॥ जाहु लाल घर आपने नव रीति न की जो हो ॥ २ ॥ तब तो बालक जानि झूंठ दधि चोरि लगाई ॥ लीन्हों कसर चुकाय आज भलि दाव में आई ॥ कंस मारि उग्रसेन को हो दी हौं राज बैठाय ॥ सूधो मन दधि दीजिये ॥ नाहीं तो पछताय ॥ ३ ॥ ऐसी रीति जो करि हो कान्ह तब देश बिहाऊं ॥ बोले नाथ जहां हम नहिं ऐसी कौन ठाऊं ॥ लज्जित है दधि ला दई हो खाये नन्द किशोर ॥ जगन्नाथ सब ने भलो राधा जी के गोरस हो ॥ ४ ॥ २६ ॥ धुरपद ॥ राग पर्ज ॥ री आज सब

गुण निधान पूनो ऋतु शरद जान रास रच्यो नंद नन्दन ॥
ध्रु० ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहे पग नूपुर धुनि बाज-
त री ॥ मन्द मन्द मुसकात चलत हरि कर मुरली धर
साजत री ॥ श्याम स्वरूप सुभग तन देखत काम कोटि
मन लाजत री ॥ मणि घन मोल मुकुट में भ्राजैं शोभा-
त कुण्डल कानन ॥ १ ॥ करि शृंगार सजी तहँ राधा मोह
न संग बिराजत री ॥ और सकल गोपी संग नाचत बाजन
बहु बिधि बाजत री ॥ शीश रु कर्नफूल नक बेसर कंकण
सारी राजत री ॥ ऐसो रास रच्यो बन बारी मोहित भे सब
देवन ॥ २ ॥ शिव विरञ्चि और इन्द्र बरुण शशि देखत
रास मचावत री ॥ सकल भये आनन्दित देखत पुष्प अधि
क बरषावत री ॥ जो सुख सकल देव मुनि दुलर्भ सो ब्रज
गोपिन पावत री ॥ जगन्नाथ या बिधि सुख करिके आये
भवन सब आपन ॥ ३ ॥ २७ ॥ राग सोरठ ॥ चलि
भेल नन्द अहीर देवी के पूजन के कारन ॥ ध्रु० ॥ रही मा-
नता देवी पूजन होय बरस द्वादश मन मोहन ॥ सोइ दिव
स पहुंचो अब आइ चले सब ले पट चीर ॥ १ ॥ पूजा क-
रि सोये सब जब हीं अजगर एक गयो तहँ तब हीं ॥ गहि चर
ण नन्द राय के निगलेउ तब जागे बल बीर ॥ २ ॥ राखा
चरण पीठ पर जब हीं भयो प्रगट विद्या धर तब हीं ॥ ताको
तारि फिरे सब मिलि घर मोहन हलधर बीर ॥ ३ ॥ एक
दिवस हरि रास मचायो ॥ शंख चूड़ यक्ष तहँ आयो ॥
जगन्नाथ गोपिन लै भागेउ तासु हना यदुबीर ॥ ४ ॥ २८ ॥

राग गौरी ॥ एक समय यमुना के तट पर गइ सखि-
यन मन भावनी ॥ तामें बीचि में राधिका गज गवनी परम-
सोहावनी ॥ १ ॥ तहँ फूल हार बनाइ मोहन दीन्ह गल
चन्द्रावली ॥ रिसियाय राधा बैठि तब हरि भेजि दूति उ-
तावली ॥ २ ॥ चलहु राधा हरि बोलावें बात हमरी मानु
जी ॥ केहि कारने रिसियाय बैठी सो सब मोहिं बखानु-
जी ॥ ३ ॥ फूल हार बनाइ मोहन दीन्ह दूसर नाइ के ॥
दीन्ह मोहिं बिसारि यदुपति फिरेउ तेहि ते रिसाइ के ॥ ४ ॥
चलहु चलहु तुम चलहु राधा चलहु श्याम बुलावहीं ॥ अस
समय नहिं जाहुगी तुम अन्त को पछतावहीं ॥ ५ ॥ आप आ-
ये हरि मनावन राधकहि शिर नाइ के ॥ मिलि जुली करि
सकल गोपिन हमे श्याम हँसाइ के ॥ ६ ॥ गावे सुने जो-
मान लीला आश धरि गिरधार के ॥ होय पूरण आश गावे
जगन्नाथ विचार के ॥ ७ ॥ २९ ॥ राग मल्लार ॥ बरषा-
ऋतु जब ब्रज आई ॥ चढ़ि के हिंडोले कुँवर कन्हाई ॥ स-
खियन संग गावत गाना ॥ राग मल्लारादिक हरषाना ॥ १ ॥
सब देवन उर पछताई ॥ फूलन माल तहां झर लाई ॥ धन
भाग सकल ब्रज बनिता ॥ जिन संग गावहिं कमला क-
न्ता ॥ २ ॥ गन्धर्वन गावहिं गाना ॥ नाचत सब अपसरा ह-
रषाना ॥ शोभा ब्रज की बरणि न जाई ॥ देव नारि मोहित
जहँ भाई ॥ ३ ॥ जिन्ह निर्गुण ब्रह्म सदाई ॥ करहिं चरि-
त जन बश सुख दाई ॥ सोइ मोहन कुवँर कन्हाई ॥ जग-
न्नाथ बसु मम उर आई ॥ ४ ॥ ३० ॥ राग काफी ॥ होरी

खेलत किशोर किशोरी ॥ धु० ॥ फागुन मास जबहिं ब्र-
ज आयो ॥ शोभा कौन कहोरी ॥ इत हरि ग्वाल बाल
दल लाये ॥ उत दल राधा गोरी ॥ परस्पर खेलत होरी ॥ १
राधा कहत सुनहु ब्रज बनिता ॥ आज पकड़ि हरि कोरी ॥
चीर कसर सब लेहु चुकाई ॥ अस कहि पोरयों रोरी ॥
चहुं अँधियार छयोरी ॥ २ ॥ तहँ एक सखि धरि लीन्ह
मोहन को नारि स्वरूप कियोरी ॥ नयनन में काजर भरि
दीन्हा ॥ लीन्हा पीताम्बर छोरी ॥ भागे हरि निज दल मो-
री ॥ ३ ॥ ग्वाल एक राधा दल भेजा ॥ नारि के रूप बनो-
री ॥ लाइ दियो पीताम्बर यदुपति ॥ यमुना नहान चलो-
री ॥ असुर एक भेंट भयोरी ॥ ४ ॥ बैल रूप वृषभासुर आ-
यो ॥ हरि ते युद्ध भयोरी ॥ ताहि मारि दीन्हा यदुनन्दन ॥
केशी को कंस पठोरी ॥ ताहि यदुनाथ हनोरी ॥ ५ ॥ तब
हिं कंस अक्रूर को भेज्यो ॥ यज्ञ बहान करोरी ॥ ब्रज में
जाइ भ्रात दोउ ले गये ॥ तहँ बहु बीर हनोरी ॥ गये जहँ
कंस रहोरी ॥ ६ ॥ चढ़ि मचान कंसासुर बैठा ॥ लपकि
के केश धरोरी ॥ धरणि पछारि मारि हरि दीन्हा ॥ मातु
पिता बंध छोरी ॥ उग्रसेन राज दियोरी ॥ ७ ॥ जात समय
मालिन एक कुबजा ॥ हरि को चन्दन लगोरी ॥ तेहि गह
जाइ के आश पुराई ॥ ऊधो सखा से कहोरी ॥ सुधि अबले
[illegible] ब्रज कोरी ॥ ८ ॥ पाती एक हाथ धरि दीन्ही ॥ योगक-
[illegible] जो लिखोरी ॥ जाइ सखा सखियन समझावहु ॥ दे-
[illegible] दशा तिन कोरी ॥ कहत जगन्नाथ कहोरी ॥ ९ ॥ ३९ ॥

॥ राग भूपाली ॥ प्रभु बिन सखियां कुंजनवां उदासी ॥ धु॰ लय अक्रूर क्रूर हरि भाग्यो ॥ लेत के सुधि बृन्दाबन बासी ॥ १ ॥ अब के कोरे संग रास मचाऊं ॥ वलहन केकर कहब यशोदासी ॥ २ ॥ अन्न न सोहात न पानी पीऊं ॥ प्रभु चित लाइ के रहउं उपासी ॥ ३ ॥ अति व्याकुल भय नन्द यशोदा ॥ राधा ललिता सखिन समुदासी ॥ ४ ॥ जन जगन्नाथ है आश लगाये ॥ कब से हैं हलधर अबिनाशी ॥ ५ ॥ ३२ ॥ राग बिहाग ॥ ऊधो गये लेइ पाती वृन्दाबन ॥ देखा सबहिं अकुलाती ॥ धु॰ ॥ हरि के बिरह ग्वालिन सब धाईं ॥ गाय माय नन्द राई ॥ कबहुं कि याद करहिं मन मोहन ॥ कहहु सकल कुशलाती ॥ १ ॥ योग कथा समुझावन लागे ॥ सुनि सुनि फटकत है छाती ॥ निर्गुण ब्रह्म सदा हरि जानहु ॥ देहु तजी बिकलाती ॥ २ ॥ राधादिक गोपिन सब बोलीं ॥ यह बिधि कुब्जा सिखवाती ॥ जाइ कहो हरि आय सिखावें ॥ तजि कुब्जा संघाती ॥ ३ ॥ ऊधो गये तुरतहिं मथुरा में कहि दीन्हों कुशलाती ॥ बिकल होइ हरि ब्रज में रहि गये तन धरि द्वारका थाती ॥ ४ ॥ या बिधि लीला कहत मन मोहन ॥ तारन जन समुदाई ॥ जन जगन्नाथ मुक्ति नर पावे ॥ लीला सुने हरि भाती ॥ ५ ॥ ३३ ॥ लीला समाप्ता ॥

अथ विनय ॥

राग पीलू ॥

भजु मन चरण गोपाल ए भला ॥ मुरली धर नन्द लाल

ए जी भला ॥ १ ॥ यशोदा नन्दन मुरारि ए भला ॥ वासु
देव गिरि धारी एजी भला ॥ २ ॥ गोपी नाथ बिहारी ए
भला ॥ रसिक श्री बन वारि एजी भला ॥ ३ ॥ मधु सूदन
कंसारि ए भला ॥ मोह ताप त्रय हारि एजी भला ॥ ४ ॥
रुकुमिनि पति यदुराज ए भला ॥ श्रीपति सुरशिरताज
एजी भला ॥ ५ ॥ अधम उधारनश्याम एभाला ॥ पूरण
जन मन काम एजी भला ॥ ६ ॥ जन तारन सुख खान
ए भला ॥ आरत हर भगवान ए जी भला ॥ ७ ॥ जग-
न्नाथ चित लाग ए भला ॥ भक्ती अभय वर मांग एजी
भला ॥ ८ ॥ ३४ ॥ राग झंझोटी जो तुम पावन हम-
हूं पतित हैं ॥ हम से पतित को तुमहिं उबारो ॥ धु० ॥
जो तुम उधारन हम हूं अधम हैं ॥ हम से अधम को तुम
हिं उधारो ॥ १ ॥ जो तुम वस्त्र तो हम हूं मजीठ हैं ॥ धोवन
से नहिं होवत न्यारो ॥ २ ॥ जो तुम साहेब हम चाकर
हैं ॥ उचित अनुचित नहिं चाह बिचारो ॥ ३ ॥ भणि
जगन्नाथ शरण वत्सल प्रभु ॥ शरणगहे पर नेकु नि-
हारो ॥ ४ ॥ ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ सो सम कौन पतित
जग माहीं ॥ तुम से नाथ पतित गण पावन रहित सकल
उपमाही ॥ धु० ॥ हरि जन के सत संगन भावे प्रीतिभजन
में नाहीं ॥ कलि मल ग्रसित कथा न सोहाये शिरोमणि
सब खल माहीं ॥ २ ॥ हे प्रभु अधम उधारन मों सम दीन
दयाल सदा हीं ॥ जगन्नाथ चरण न चित लायो छमि हो
अधमक माही ॥ २ ॥ ३६ ॥ राग भैरों ॥ यासेकौनअभागी

होना ॥ जाको हरि के भजन चित लोना ॥ ध्रु० ॥ भक्तमाल श्री रामायण के ॥ पुस्तक ढेर जमोना ॥ तदपि प्रीति लगे न अधम को प्रभु सुमिरन नहिं होना ॥ १ ॥ खावे को उत्तम पेन्हे को उत्तम उत्तम सब कछु जोना ॥ एक घड़ी प्रभु में नहिं प्रीती चिन्ता आन करोना ॥ २ ॥ जग में देखावत आपन करनी मन में नहिं कछु होना ॥ अन्त काल जब जावे जगत से उत्तर कौन लगोना ॥ ३ ॥ ऐसो का को अभाग है जग में जिमि मति मन्द को होना ॥ जन जगन्नाथ म-भी से पामर वृथा समय को बिताना ॥ ४ ॥ ३७ ॥ अब तो शरण राखि लेहु नन्द के दुलारे ॥ ध्रु० ॥ हौं अति मति मन्द विषय काज लाग प्यारे ॥ मोह विवश होत नाहीं भजन भाव धारे ॥ १ ॥ ऐसो खल जगत काम तुम ते रह न्यारे ॥ तुम बिनु हम से अधम को कौन अब उधारे ॥ २ ॥ कीन्हों अपराध ढेर देहु सब बिसारे ॥ भक्ति अभय देहु नाथ यह बिनय हमारे ॥ ३ ॥ तुम तो करुणा निधान अधम ढेर तारे ॥ जगन्नाथ शरण आये तरन आश धारे ॥ ४ ॥ ३८

राग परज ॥ सुनिये श्री यदुराई मेरी पुकार ॥ ध्रु० ॥ देवकी गृह अवतार लीन्ह प्रभु नन्द के लाल कहाये ॥ पूतना कंस साल्व को मारे राजन बन्दि छुड़ाये ॥ अर्जुन सुमति सिखाई ॥ १ ॥ आपहि गीता में प्रभु भाष्यो जो गहे शरण हमार ॥ कैसहु अधम पातकी होवे करु मैं ताहि उधार ॥ मोपर होहु सहाई ॥ २ ॥ जगन्नाथ अस सोचि दया निधि लीन्हों शरण निहार ॥ जन्म जन्म भक्ति नरभा

जामें होय उवार ॥ दरशन देहु दिखाई ॥ ३ ॥ ३९ ॥

राग मालती ॥ किरपा निधान दया अब कीजे ॥ धु॰॥ जो कछु अवगुण भये हैं मोते ॥ सो सब आप क्षमा करि लीजे ॥ १ ॥ बिमल ज्ञान भक्ती बर मागों ॥ शरण गहे पर ध्यान धरीजे ॥ २ ॥ तुम से दयाल न हम से दीन हैं ॥ किंकर के दुख को अब छीजे ॥ ३ ॥ जगन्नाथ एक दासतिहारो ॥ मरण काल में हरि भज लीजे ॥ ४ ॥ ४० ॥ ✤ ✤

इति श्री कृष्ण बाल लीला श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृता कलिमल नाशिनी भक्ति प्रकाशिनी सम्पूर्णा ॥ ✤ ॥

दोहा

जगन्नाथ हरि दास कृत चालिस भजन रसाल ॥
संवत उन्निस एक तिसहि लिख्यो भुनेश्वर लाल ॥ १ ॥
संवत् उन्निस तीस में वरणन कियो अनूप ॥
सब पद हैं रस के भरे लीला सुर नर भूप ॥ २ ॥
बन्दा तिन को शिष्य है रहत सदा संग साथ ॥
जिन को मन लौ लीन है सन्तत हरि गुण गाथ ॥ ३ ॥
नाम नवरंगी लाल मम अपर शिष्य मोहिं जान ॥
जिन के संगति बुधि बढ़त होत भक्ति भगवान ॥ ४ ॥

शुभम्भूयात्

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
चौहान कृत -	४-किष्किन्धाकाण्ड	प्रेमजाल व नाटक	पद्मावती खण्ड
१- आदि पर्व	५-सुन्दरकाण्ड	हनू नाटक	शुक बहत्तरी
२- सभापर्व	६-लंका काण्ड	**वेदान्त**	बकावली सुमन
३-वन पर्व	७-उत्तर काण्ड		चहार दरवेश
४-विराट पर्व	रामायण ग्रन्थार्थ कोष	योग वाशिष्ठ	क़िस्सा हातिमताई
५-उद्योग पर्व	रामायण का इतिहास	बालब्रह्माऽमृतवर्षि	क़िस्सा गुलसनोबर
६-भीष्म पर्व	रामायण मानस टी.	सांख्य तत्त्व कौमुदी	दास्तान अमीर हमज़ा
७- द्रोण पर्व	रामायण कवितावली	सुन्दर विलास	सहस्र रजनी चरित्र
८- कर्ण पर्व	रामायण गीतावली	केनोपनिषद	रॉबिन्सन का इतिहास
९- शल्य पर्व	सटीक	ईशावास्य उपनिषद	सीता हरण
१०- गदा पर्व	विनयपत्रिका बा. मो.	पारस भाग	सती विलास
११-स्त्री पर्व	विनयपत्रिका बा. शि.	बीजक कबीरदास	क़िस्सा मर्द औरत
१२- स्वर्गारोहण	विष्णु पुराण भाषा	**राग**	संगीत मल्हार
रामायण रामविला.	लिंग पुराण		**मुतफ़र्क़ात**
रामायण तुलसीकृ.	ब्रह्मोत्तर खण्ड	राग प्रकाश	
रामायण सटीक म.	शुक्रनीति	लावनी	शनिश्चर की कथा
रामानन्द दीपिका के	वाराह पुराण	क़ानून सितार नागरी	ज्ञानमाला
ग आदि	भविष्योत्तर पुराण	भरथरी गीत	गोपीचन्द भरथरी
तथा जिल्द बन्धी	स्कन्ध पुराण	रीडर नम्बर १	कथा श्री गंगाजी
तथा मोटे अक्षरों की	वाल्मीकीय रामायण	रीडर नम्बर २	अवध यात्रा
मय तसवीर व क्षेपक	अद्भुत रामायण		दानलीला व नागलीला
रामायण ह. कृ. टी.	सुखसागर छापेटैप	**क़िस्सा वग़ैरह**	दोहावली व रत्नावली
सुखदेव लाल कृ.	तथा छापा पत्थर	नानार्थ नौसंग्रहावली	गौकर्ण माहात्म्य
रामायण शु. कृ. टी.	सुदामा चरित्र	ब्रह्मसार	श्री गोपाल सहस्रनाम
शुकलानन्द स्वामि कृ.	श्री अनुरागरस	शिवसिंह सरोज	कथा सत्यनारायण स.
रामायण तुलसीकृ.	**नाटक**	भक्तमाल	हनुमान नाटक
अलहदा भी हैं -		इन्द्रसभा	अलक पचीसी
१- बालकाण्ड	प्रबोध चन्द्रोदय	विक्रम विलास	हरिहर सगुण निर्गुण
२- अयो... ण्ड	रामाभिषेक	बैताल पचीसी	पदावली
३- आर... ण्ड	आनन्द रघुनन्दन	सिंहासन बत्तीसी	मनयात्रा

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
कायस्थवर्णनिर्ण·	ज्योतिष भाषा	मुहूर्त चक्रदीपिका	पाराशरी सटीक
विहार वृन्दावन	जातक चन्द्रिका	मुहूर्त चिन्तामणि स·	शीघ्रबोध सटीक
समरविहारवृन्दावन	जातकालंकार	मुहूर्त दीपक	लघुजातक
कल्प भाष्य	[illegible]	बृहज्जातक सटीक	षट्पञ्चाशिका
लक्ष्मी सरस्वती सं·	ज्ञान स्वरोदय	जातकालंकार	सामुद्रिक
दरसी	रमलसार	जातकाभरणा	गरुड़ पुराण
	रमल नौरत्न	होरा मकरन्द	रामविवाहोत्सव
स्वयम्बोध	इन्द्रजाल	मुहूर्त मार्तण्ड स·	सरिश्ते तालीम
ज्ञान चालीसी	संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	की पुस्तकें
दोहावली			संस्कृत
बालाबोध	लघुकौमुदी	मनुस्मृति	
विद्यार्थी की प्रथम	सिद्धान्तचन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऋजुपाठ १ भाग
पुस्तक	भाषा तत्त्वप्रकाश	महिम्न स्तोत्र	तथा २ भा· व ३ भाग
किताबजंत्री	पञ्च महायज्ञ	व्रतार्क	धातुरूपावली
गणित कामधेनु	कर्मविपाक संहिता	याज्ञवल्क्य स्मृति	नागरी कैथी
लीलावती	निर्णयसिन्धु	मार्कण्डेय पुराण	
पटवारियों की पु-	संग्रह शिरोमणि	संस्कृत भाषा टीका	वर्णमाला कैथी १ भा·
स्तक ४ भाग	भगवद्गीता पंचरत्न		तथा २ भाग
वैद्यक भाषा	दुर्गापाठ मूल	अमरकोष तीनों काण्ड	तथा कैथी फ़ारसी
	तथा सटीक	याज्ञवल्क्य स्मृति	नागरी
निघण्टु	विष्णु [illegible]	सन्ध्यापद्धति	
अमरविनोद	कथा [illegible]	व्रतार्क	[illegible]
वैद्यजीवन	अपराध भञ्जन स्तोत्र	भगवद्गीता टीका	अक्षरारम्भ
औषधिसंग्रहकल्प	कायस्थकुलभास्कर	हरिवंशलाल कृत	वर्णप्रकाशिका १ भा·
वल्ली	कायस्थधर्मनिरूपण	भगवद्गीता टीका	तथा २ भाग
अमृतसागर बड़ा	तथा छोटा	आनन्दगिरि कृत	सहजपुर की कहानी
तथा छोटा	मधुरसभा	गीतगोविन्द	धर्मसिंह का वृत्तान्त
वैद्यमनोत्सव	ज्योतिष	[illegible]	शिक्षावली
[illegible]		धर्मार्थसार	शिशुबोध
[illegible]	मुहूर्त गणपति	शार्ङ्गधर संहिता	इत्यादि